कक्षा - नौवीं विषय हिन्दी

क्षितिज भाग-1

पाठ- 17

कविता - बच्चे काम पर जा रहे हैं

कवि - श्री राजेश जोशी

मॉड्यूल -1/1 (हैण्ड आउट)

प्रस्तुतिकरण : खीमाराम

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-2, तारापुर.

सारांश :

कवि राजेश जोशी पूरी दुनिया के बच्चों के भविष्य को लेकर चिंतित है। वे खेलने-कूदने और पढ़ने - लिखने की उम्र में बच्चों के काम पर जाने को एक सभ्य समाज के लिए कलंक मानते हैं। वे व्यंग्य करते हुए हैं कहते हैं कि जब सारे खिलौने ,बाग-बगीचे , खेल के मैदान स्कूल आदि सब सही सलामत है तो ऐसी क्या मज़बूरी है कि फ़िर भी पूरी दुनिया में बच्चे सुबह-सुबह ही काम पर निकल जाते हैं। जब हम सब भयंकर सर्दी और कोहरे के कारण अपने घरों में सोए रहते हैं तब यह बच्चे सुबह- सुबह ही काम पर निकल जाते हैं। यह पूरे मानव समाज के लिए , संपूर्ण मानवता के लिए एक अभिशाप है। इस बात पर हम सबको सोचना चाहिए कि बच्चे अपना पेट पालने के लिए भयंकर और जोखिम भरे कामों पर जा रहे हैं।यह हमारे लिए एक बहुत ही बड़ा और चिंताजनक प्रश्न है। आखिर क्यों बच्चे काम पर जा रहे हैं ?